विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक - 27 पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, एफ-3, एमआईडीसी क्षेत्र, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई -93 जनवरी - मार्च 2013

सम्पादकीय

मुझे यह बताते हुए हर्ष होता है कि, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से 'ख' क्षेत्र के केन्द्र सरकारी कार्यालयों में वर्ष 2011-12 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिन्दी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, मुंबई को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । राजभाषा के क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैं पक्षेविसमिति के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

वर्ष 1991 में हमारे तत्कालिन प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव ने आर्थिक सुधारों के लिए पथ बनाया । उदारीकरण को ध्यान में रखते हुए बुनियादी सुविधाओं को उच्च प्राथमिकता दी गयी । विद्युत सबसे महत्वपूर्ण बुनियादी सुविधाओं में से एक है ।

विद्युत को हालाँकि पूँजिगत वस्तुओं के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है , लेकिन यह अन्य पूँजीगत वस्तुओं से अलग है । अन्य पूँजीगत वस्तुएँ संग्रहित की जा सकती हैं और उनके उत्पादन की क्षमता, निवेश और मूल्य निर्धारण बाजार पर निर्भर होता है । विद्युत अधिनियम 2003 में विद्युत को अन्य पूँजीगत वस्तुओं में गिने जाने के लिए प्रयास किया गया । विशेष रूप से विद्युत क्षेत्र में खुला प्रवेश एवं विद्युत विनिमय, यह इस अधिनियम की आधार शिला है, जो विद्युत क्षेत्र में प्रतियोगिता लाने का प्रयास करती है । विद्युत विनिमय द्वारा विद्युत के लेन देन से ओपन मार्केट का वातावरण निर्माण होता है , लेकिन विद्युत विलासिता की वस्तु न होकर यह जरूरत है और गरीब से गरीब व्यक्ति को भी अपने दैनंदिन उपयोग के लिए विद्युत की आवश्यकता होती है । अत; विद्युत को किसी अन्य उत्पादन की तरह उपभोग की वस्तु मानना यह बहुत बड़ी गलती होगी । समय ही बतायेगा कि यह सुधार विद्युत उद्योग में पर्याप्त वृद्धि लायेगा और उपभोक्ताओं को सस्ती एवं विश्वसनीय विद्युत प्रदान करेगा ।

शुभकामनाओं सहित ।

सु. द. टाकसांडे

सु.द. टाकसांडे
सदस्य सचिव (प्र.)

राजभाषा समाचार

- गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, द्वारा वर्ष 2011-12 का द्वितीय पुरस्कार कार्यालय को प्राप्त हुआ । दिनांक 1 फरवरी 2013 को अहमदाबाद में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में श्री एल.के. एस. राठौर, राजभाषा अधिकारी / कार्यपालक अभियंता ने ट्राफी एवं श्रीमती तरूप्रभा शैल हिन्दी अधिकारी ने प्रमाण पत्र ग्रहण किया ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 101 वीं बैठक दिनांक 16 जनवरी 2013 को श्री सु.द.टाकसांडे, सदस्य सचिव (प्र.) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 13 वीं बैठक दिनांक 5 मार्च 2013 को सम्पन्न हुई जिसमें श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव एवं श्रीमती तरूप्रभा शैल हिन्दी अधिकारी ने भाग लिया ।
- दिनांक 21 मार्च 2013 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'ग्रिड व्यवधान' विषय पर श्री पी.डी. लोणे, कार्यपालक अभियंता ने व्याख्यान दिया । कुल 5 अधिकारी एवं 10 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।
- पक्षेविसमिति की वर्ष 2011-12 की वार्षिक रिपोर्ट द्विभाषी जारी की गई ।

समाचार दर्पण

- श्री डी.बी. शंकर राव, कार्यपालक अभियंता का दिनांक 15 मार्च 2013 को केविप्रा, नई दिल्ली स्थानांतरण हुआ ।
- श्री एस. के. चांवरिया, कार्यपालक अभियंता ने दिनांक 6 मार्च 2013 को पक्षेविसमिति, मुंबई में कार्यभार संभाल लिया । पक्षेविसमिति परिवार में हार्दिक स्वागत ।

तकनीकी समाचार

- पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति की 22 वीं बोर्ड मिटिंग दिनांक 26 फरवरी 2013 को गाँधी नगर में सम्पन्न हुई ।

संपादक मंडल : श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव
श्रीमति तरूप्रभा शैल, हिन्दी अधिकारी, श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक

आखरी एल. टी. सी.

शेष कुमार सावंत, उ.श्रे.लि.

मेरी सरकारी नौकरी की शुरूवात 12 मई 1975 को हुई । उस वक्त एल.टी.सी. का एक अलग-सा नियम था । वैसे गृह नगर और भारत में कहीं भी ले सकते थे, लेकिन पहले 400 कि.मी. की यात्रा का किराया सरकारी कर्मचारी को अपनी जेब से भरना पड़ता था । मेरे कार्यस्थल से मेरा गृह नगर सिर्फ 350 कि.मी. दूर है । इसलिए मैं उस दौरान एल.टी.सी. का लाभ नहीं उठा पाया । जब 1978 में 400 कि.मी. वाला नियम निकल गया तब हमने 'एनी वेयर इन इंडिया' लेने का सोचा । हम तीन-चार दोस्त मिलकर उत्तर भारत के दौरे पर जाने के लिए तैयार हो गए । नवम्बर 1978 में काश्मीर तक जाने का तय हुआ । हर महीने 100 /50 की बचत कर हमने पैसा जमा कर लिये । उस वक्त रेल राउंड टिकट की सुविधा थी । मुंबई से इंदौर-आगरा-दिल्ली-पठानकोट-अमृतसर-जम्मु तावी-श्री नगर-दिल्ली-उदयपुर-माउंट आबू-मुंबई । तकरीबन 20 दिन हम सैर पर थे । और अब 2013 फरवरी माह में 'अंडमान निकोबार' द्वीप जाने का तय किया । मेरे सरकारी नौकरी की आखिरी एल.टी.सी !

हिन्दुस्तान के नक्शे में कुल 572 द्वीप का समूह, अंडमान निकोबार सबसे अलग दिखाई देता है । बंगाल के उप सागर में दूर छोटे-छोटे बिन्दु जिसे काला पानी के नाम से जाना जाता है । तकरीबन 5 माह पहले हम दोस्तों ने मिलकर अँडमान निकोबार जाने का फैसला किया । वैसे मेरी सहकर्मी श्रीमती राणे वहाँ जाकर आयी थी । उन्होंने हमें अंडमान निकोबार के बारे में काफी कुछ बताया था । सबसे पहले हमने अपने ग्रुप का एयर टिकट लिया । एयर टिकट जितनी जल्दी खरीदो उतना ही सस्ता मिलता है । सरकारी हॉलीडे होम 60 दिन पहले बुक करना पड़ता है ।

2 फरवरी 2013 में हम सभी मुंबई एयर पोर्ट पर सुबह 4 बजे से इकट्ठे होने लगे । मुंबई से सुबह 5:55 बजे रवाना होकर 11.00 बजे वीर सावरकर एयर पोर्ट (पोर्ट ब्लेयर) पहुँच गए । वहाँ पर सूर्योदय 4.30 बजे सुबह एवं सूर्यास्त शाम 5.00 बजे होता है । एयर पोर्ट से बाहर आते ही श्री विक्टर ने हमारा स्वागत किया । हम सभी यात्रियों के रहने एवं घूमने का प्रोग्राम उन्होने बताया । हम होटल पहुँचे। हमारे बजट के मुताबिक ए.सी. कमरे हमे उपलब्ध कराये गए । हम मुंबई से काफी दूर आये थे । हम सबके चेहरे पर अनोखा आनन्द दिखाई दे रहा था । काफी सालों से मेरी इच्छा पोर्ट ब्लेयर जाने की, आस पूरी हो गई । उस धरती पर पाँव रखने के बाद ऐसा लगा कि वाकई मेरा हिन्दुस्तान महान और विशाल है । पहले हमें लगता था कि काश्मीर से कन्या कुमारी तक ही सीमित है हमारी धरती । परन्तु यहाँ आने के बाद, वो भी हमारे देश की मिट्टी में, दिल ही दिल में हम अपने-आपको खुश नशीब समझने लगे । यहाँ अपने ही लोग हैं । हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानते हैं । यहाँ अधिकतर बंगाली और तमिलियन हैं । इस जगह को काला पानी कहते थे पर अब ये टूरिस्ट प्वाइंट हो गया है । अब यहाँ हनीमून के लिए नव विवाहित युगल भी आने लगे हैं ।

देहलान पुर होटल में हम सब के रहने की व्यवस्था अच्छी तरह हो गई । दूसरे दिन हमें 'हॅवलॉक आईलैंड' के लिए रवाना होना था । हॅवलॉक आईलैंड के लिए हम 11.30 बजे बाराटांग नामक बोट से रवाना हो गये । सब लोगों को एक नया अनुभव हो रहा था । डेक पर जाकर फोटोग्राफी, वीडियो शूटिंग लोग कर रहे थे । समुद्र का नीला-नीला पानी, शुद्ध हवा, दूर आईलैंड के छोटे छोटे टुकड़े जिन पर पेड़ और पौधे का सुंदर दृश्य । यहाँ देखूँ की वहाँ ऐसा हमें लग रहा था । हॅवलॉक में हमारी वी-नॉट होटल में रहने की व्यवस्था की गयी । हम शाम 4.00 बजे फारेस्ट बीच और वहाँ के लोकल मार्केट देखकर आये । दूसरे दिन 'राधा नगरी' बीच देखने गए । बड़ा प्यारा, नीला और साफ-सुथरा समुद्र का किनारा । वहाँ समुद्र में नहाना, मौज मस्ती करना हो गया। उसके बाद रायल पैलेस देखा और शाम 4.00 बजे बम्बूका नामक बोट से पोर्ट ब्लेयर आ गये ।

दूसरे दिन सुबह 9.45 को 'रास आईलैंड' के लिए रवाना हुए । अंग्रेजों ने इस द्वीप को अपनी राजधानी बनाई थी । वहाँ का म्यूजियम और पावर हाउस देखकर एक बजे वाइपर आइलैंड आये । इस वाइपर आइलैंड मे स्वतंत्रता संग्राम सैनिक श्री शेर अलीखान को पहली फांसी दी गई थी। बाद में उस वाइपर आईलैंड में महिला कैदियों के लिए फॉसी घर बनाया गया । यह सुनकर हम सब शांत हो गये । क्या लोग थे वो! कौन-सी मिट्टी के बने थे , दिमाग चकरा गया । सन्नाटा-सा छा गया था ।

3 बजे हम नार्थ बे आईलैंड देखने गये । वहाँ वॉटर गेम का मजा लिया । समुद्र में कोरल और रंगीन मछली देखी । एक अनोखा अनुभव मिला । यहाँ के स्थायी निवासी बहुत ही नर्म दिल और इमानदार है ।वहाँ के लोगों में वीर सावरकर जी के प्रति बड़ा सम्मान दिखाई दिया । वीर सावरकर जी ने यहाँ 11 साल कालापानी की सजा काटी ।यहाँ गुनहेगारी जैसे की ज़ीरो % परसेंट है । यहाँ के 98% लोग शिक्षित हैं । वहाँ एक भी सिनेमा थियेटर दिखाई नहीं दिया । पूछने पर ड्राइवर ने बताया कि वह तो दो साल पहले ही बंद कर दिये गये क्योंकि इससे बच्चे बिगड़ जाते हैं । यहाँ एक-एक परिवार को 5-5 एकड़ जमीन और सरकारी नौकरी देकर 1950 में बसाया गया ।

यहाँ के लोग ईमानदारी से अपना काम करते हैं और गुजारा करते हैं । यहाँ कोई खास चीज उगती नहीं सिवा नारियल और सुपारी के । यहाँ की सारी चीजें जैसे की सब्जी से लेकर कपड़े, धान्य, फल, कंस्ट्रक्शन का सामान आदि चेन्नई से मंगाया जाता है । बाजार भाव लगभग मुंबई जैसा ही है । खाने के मसाले में कुछ ज्यादा फर्क महसूस नहीं हुआ । खाने में ज्यादातर मछली का प्रयोग होता है, जो चेन्नई से ही आती हैं । यहाँ जंगल है पर सुवर और हिरन के अलावा अन्य जानवर नहीं हैं। इस मुल्क में एक भी भिखारी नजर नहीं आया, पूछा तो बताया गया कि यहाँ पर भिखारी हैं ही नहीं ।

यहाँ होटल बिजनेस ज्यादा हैं । लॉज सस्ते हैं । मदिरा का अनुभव लेने वालो के लिए यह जगह तो स्वर्ग है । यहाँ रास्ते पर 10-11 बजे रात तक चहल-पहल रहती है । यहाँ का जीवन शांति पूर्ण है । 'समुद्रीका नेवल मरीन म्युजियम' देखने लायक है । 'जॉली ब्वाय आइलैंड' जो सबसे सुंदर बीच है वहाँ जाने के लिए नेशनल पार्क प्रवेश परमिट लेना जरूरी है । वॉटर गेम से भरपूर है ऐसा मजा यहाँ मुंबई या आस-पास कहीं नहीं है । ये साल में 6 महीने खुला रहता है और अगले 6 महीने 'रेड स्कीन आईलेंड' खुला रहता है । 'महात्मा गाँधी नेशनल पार्क' और साऊथ अँडमान में 'माउंट हेरीटेज' जगह देखने लायक है , जिसका दृश्य बीस रूपये के नोट पर आप देखते हैं ।

यहाँ का एक ऐतिहासिक स्थल राष्ट्रीय स्मारक बनाया गया है, जिसका नाम है 'सैल्यूलर जेल' । जहाँ हजारो स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों को स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अंग्रेजों ने कैदी बनाकर रखा था । इन कैदियों में एक महान नाम था वीर सावरकर, जिन्हें 11 साल (1909-1921) न केवल कैद कर रखा गया बल्कि टार्चर भी किया गया । उन्हें मानसिक पीड़ा देने के लिए उनके कमरे के सामने ही सुबह-शाम कैदियों को शारीरिक पीड़ायें दी जाती थीं तथा फॉसी भी दी जाती थी। इसी विषय पर शाम पाँच बजे वहाँ पर म्युजिक और लाइट शो होता है जिसमें स्वतंत्र वीर सावरकर जी की यह पंक्तियाँ मन को रूला देती हैं :

''ने मजसी ने परत मातृभूमिला, सागरा प्राण तळमळला''

अर्थात- ''हे सागर मुझे मेरी मातृभूमि से मिला दे, मेरे प्राण तड़प रहे हैं।''

वहाँ की यादों को मन में संजोये हम दिनांक 9 फरवरी 2013 को मुंबई वापस आ गये ।

******